अध्याय पचपनवाँ

॥श्री गणेशाय नमः॥ श्री सरस्वत्यै नमः॥ श्री सिद्धारूढ़ाय नमः॥

"शुद्ध स्वभाव तथा पूर्ण विनम्रता होने वाले, सारे सद्‌गुणों का धन होने वाले, पुण्यदायी लीलाएँ दिखाने वाले, इस भवजाल में फँसे रहने से जीवात्माओं को बचाने वाले कृपालु सिद्धनाथजी, भक्तों का पालन करने वाले आप, मुझे भी आप के चरणों में लीन कराईए।"

सतगुरुनाथ सिद्धारूढ़जी आप की जयजयकार हो। आप भक्तों को आत्मज्ञान (स्वरूप) प्रदान करके उन्हें भव सागर के सारे दुखों से बचाते हैं, इसीलिए, मैं विनम्रता पूर्वक आपके चरणों में माथा रखता हूँ। आपकी जीवनी अत्यंत मधुर होकर केवल उसे सुनने से ही मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं तथा माया मोह के कारण जो लोग इस जगत में मूर्ख तथा अज्ञानी हो चुके हैं, ऐसे लोगों का प्रगाढ़ अज्ञान भी दूर होता है। पिछले अध्याय में साक्षात भगवान श्रीशिवजी ने ही सिद्धारूढ़जी के नाम से जगत में अवतार धारण करके लीलाएँ करने का विवरण दिया था। भगवान के अवतार कार्य में ईश्वर की आज्ञा के अनुसार अनेक देवदेवताएँ भी भगवान के साथ मनुष्य जन्म लेकर अवतरित हुए। उनके जीवन चरित्र भी अत्यंत दिव्य होने के बावजूद भी वे सारे चरित्र, इस ग्रंथ का विस्तार बढ़ने के भय से मैं यहाँ नहीं दे सकता; इसीलिए उनके बारे में अल्प जानकारी देकर इस ग्रंथ को समाप्त करने की मुझे सतगुरुजी ने आज्ञा की है। जिन्होंने श्रीसिद्धारूढ़जी की सेवा में ही अपना सारा जीवन व्यतित किया, ऐसे लोगों के केवल नामोच्चारण से भी तत्काल मन शांत हो जाता है। उन्होंने अनंत जन्मों में किया हुआ तप, इस जन्म में फलने के कारण उन्हें सतगुरुजी के चरणों का लाभ हुआ तथा उनकी सेवा करने में आनंद आया। ऐसी सेवा से प्राप्त होने वाले आनंद की वे अनुभूति लेते थे तथा सतगुरुजी की सेवा के सिवाय अन्य कुछ भी नहीं माँगते थे। सेवा में लीन हुए ऐसे भक्तों के मन की स्थिति, सहस्त्र फन तथा जिह्वाएँ होने वाला शेष भी बयान कर नहीं सकता है, तब मैं उसे कैसे बयान करुँगा? वेद भी जिन्हें समझ न पाए ऐसे सतगुरुनाथजी को जिन्होंने अपने हृदय मंदिर में बंद किया ऐसे सद्‌भक्तों की भक्ति, मैं मंदमति मनुष्य कैसे बयान कर पाऊँगा? जिसके स्वरूप का बयान करने का

प्रयास करने लगो, तो सबूत के साथ साबित की हुई घटनाएँ (या चीज़ें) जिस में बयान की गयी है, ऐसे वेद भी "ये वह नहीं, ये वह नहीं (नेति, नेति)" कहकर मौन हो जाते हैं, ऐसे स्वरूप में साक्षात कैलासनाथ श्रीशिवजी अज्ञानी लोगों का उद्धार करने के लिए सगुण रूप धारण करके सिद्धारूढ़जी के नाम से यहाँ अवतरित हुए। उस सतगुरुनाथजी के अनंत चरित्र सादर बयान करने में मेरी अल्प मति कामयाब नहीं होगी, इसलिए यह विवरण मैं यहीं समाप्त करता हूँ। उनके सद्भक्तों के नाम तथा उनका कार्य अगर मैं यहाँ सादर बयान करुँ, तो सतगुरुजी निश्चित ही आनंदित होंगे, इसलिए मैं उसे बयान करता हूँ।

उनके सद्भक्तों में सब से पहले अनंत महाराज का नाम लिया जाता है, जिन्होंने कीर्तनव्दारा बोधन करने की नीव डाली, उनके कीर्तन के रंग में रंगे हुए श्रोतागण देहभान खो बैठते थे। उन्हें अनेक दिन सतगुरुजी का निकट का साथ मिला और उन्होंने अत्यंत प्रेम से सिद्धजी की सेवा करके गुरु चरणों में ही कैलास पाया। उन्होंने किए हुए संत रामदास स्वामीजी के अद्भुत कीर्तन के समय, श्रोतागणों के आँखों से अविरत अश्रुधाराएँ बहने की, उनके मन में आनंद की लहरें उमड़ आने की तथा कीर्तन सुनकर सतगुरुनाथजी स्वयं तल्लीन होने की बातें सब जानते हैं। मिश्रकोट के शंकरशास्त्री प्रतिवर्ष भागवत सप्ताह (सात दिनों में भागवत पुराण कथा का स्पष्टीकरण) करके कार्तिक पौर्णिमा पर उसकी पूर्ती करते थे। जब कृष्णशास्त्री भागवत पुराण कथा का स्पष्टीकरण करते थे तब सुनने वाले श्रोतागण देहभान खो बैठते थे। सतगुरुजी ने उनकी सेवा स्वीकार करने से वे आनंदित होते थे, कदाचित इसीलिए, उनका उल्लेख करने की सतगुरुजी ने मुझे प्रेरणा दी है। बाबा कृष्ण गर्दे यह सतगुरुजी से अत्यंत प्रेम करने वाले एक महान भक्त थे, उन्होंने स्वयं रची हुई भक्तिपूर्ण कविताओं में सिद्धनाथजी की महिमा का बयान किया है। इसके अलावा वे वेदांत पर ग्रंथों का स्पष्ट शब्दों में विवरण करते थे, जिसे सुनकर सभी श्रोतागणों के मन पर अच्छा प्रभाव पड़ता था। बाला दीक्षित एक श्रेष्ठ विव्दान थे, वे आदि शंकराचार्यजी से लिखित "ब्रह्मसूत्र" इस ग्रंथ पर प्रवचन करते समय अत्यंत आसान शब्दों में उसका अर्थ कथन करके श्रोतागणों का मन जीत लेते थे। श्रीपादशास्त्री उपाध्येजी का धार्मिक ग्रंथों का विवरण इतना स्पष्ट होता था की

केवल उसे सुनकर ही श्रोतागणों से वह कंठस्थ हो जाता था। प्रतिदिन सतगुरुजी के सामने पुराण कथा विवरण करते समय, विरुपाक्षशास्त्री महाभारत की कथाएँ स्पष्ट रूप से बयान करके श्रोताओं का मन जीत लेते थे। उसी प्रकार वे हर एक महोत्सव के अवसर पर सादर कीर्तन करते थे, स्वयं सतगुरु महाराज संतुष्ट होकर उनसे बड़े प्रेम से व्यवहार करते थे। गोविंदसंत हलियालकर विरागी थे, वे स्वयं की पत्नी को साथ ले आकर सतगुरुजी की सेवा करते थे। वे प्रतिदिन सतगुरुजी के सामने कीर्तन करते थे तथा निर्वाह के लिए भिक्षा माँगते थे। एकबार जब वे मठ में थे तब बेंगलूरु से कुछ भक्तगण आए और उन्होंने सतगुरुजी से कहा, "हे प्रभु, हमारे गाँव प्रतिदिन कीर्तन करके हमारा उद्धार करने के लिए किसी सज्जन व्यक्ति को भेजिए। आपकी अद्‌भुत महिमा का बयान करने के लिए आप ने कुछ संतजनों को अन्य गाँव भेज दिया हैं, इसलिए, कृपा करके हमारे साथ हलियालकरजी को भेज दीजिए।" उनके शब्द सुनकर सतगुरुजी ने गोविंदजी से कहा, "तुम बेंगलूरु शहर जाकर वहाँ प्रतिदिन कीर्तन करते जाओ। वहाँ भक्तगणों को सतगुरुजी की महिमा तथा दिनरात नामस्मरण करने का बोध दे दो, जिससे भक्ति मार्ग का स्वीकार करके उनका उद्धार हो जाएगा।" उसके पश्चात हलियालकरजी बेंगलूरु जाकर कीर्तन करने लगे, जिससे श्रोतागण आनंदित हुए, सतगुरुजी की भक्ति में बढ़ोतरी हो गयी तथा हर एक भक्त सतगुरुजी से भेंट करने की मनोकामना करने लगा। उसके उपरांत सभी भक्तों को साथ लेकर गोविंदजी सिद्धारूढ़जी के दर्शन करने आए तथा दर्शन कराके फिर से बेंगलूरु लौट गए।

फिलहाल ब्रह्मैक्य (शरीर त्यागे हुए, परंतु शरीर में होते हुए ही ब्रह्म प्राप्ति होने के कारण जीवन्मुक्त हो गए हुए) हुए षण्मुख स्वामीजी पहले सिद्धारूढ़जी के साथ रहते थे। वे प्रतिदिन वेदांत का श्रवण करते रहने के कारण ज्ञानी हो गए। कई वर्ष यहीं रहने के पश्चात वे विजापुर चले गए, वहाँ वे एक ही आसन पर चौदा वर्ष बिना उठे बैठे रहे। आसन पर बैठकर ही वे अन्नजल का सेवन करते थे तथा आत्मध्यान में तल्लीन हो जाते थे। उन दिनों में उन्होंने पूर्ण रूप से मौन धारण किया तथा कठिन योगसाधना की। साधना पूर्ण करने के उपरांत उन्होंने लोकोद्धार का कार्य स्वीकार किया; वे मुमुक्षु जनों को

वेदांत पर स्पष्टीकरण देते थे, जिससे उन्हें ज्ञान प्राप्ति होती थी। उनके जीवन काल में विजापुर के उनके मठ में प्रतिवर्ष मनाए जाने वाला समारोह, आज भी मनाया जाता है, सावन महीने में मनाए जाने वाले उस समारोह के समय मेला लगता है। उस समय समारोह बहुत अद्‌भुत वैभव से मनाया जाता है। रामाचार्य कडलास्करजी ने सिद्धारूढ़जी की पूजा के लिए अनेक मंत्र तथा अनेक अँतरों के सतगुरु स्तोत्र आदि की रचना करके सिद्धनाथजी की सेवा की। सदाशिवप्पा इटगी नाम का एक सज्जन प्रतिवर्ष समारोह के समय सिद्धारूढ़जी से मिलने के लिए भजन गानेवालों की मंडली को साथ लेकर आते थे। अण्णिगेरी तोरप्प देसाई नाम का एक श्रेष्ठ सतगुरु भक्त अपने गाँव में सिद्धारूढ़जी का रथोत्सव मनाता था। जिन्होंने अत्यंत आदर के साथ सतगुरुजी की सेवा की वे काशीनाथपंत छत्रे, मेले के समय अनेक भक्तगणों को साथ ले आकर उन्हें सतगुरुजी से मिलवाते थे। विरागी सिद्रामय स्वामीजी, अनेक राज्यों में होने वाले भक्तों को सिद्धारूढ़ स्वामीजी के मुख से सुने हुए वेदांत पर सुरस प्रवचनों का बोध करके उनका अज्ञान नष्ट करते थे। शिवरात्री के समारोह के समय तथा सावन महीने के हर सोमवार को लगने वाले मेले के समय, जिन भक्तों से पूजा के लिए सहायता होती थी, उनमें तुकप्पा सपारे ये अग्रगण्य थे, उनके अलावा तुलजप्पा, मल्हार गोविंद ये दोनों भी प्रेम पूर्वक सेवा अर्पण करते थे। जिनके घर सतगुरुजी प्रतिदिन सोने के लिए जाते थे वे, सिद्धप्पा उज्जण्णवर ये प्रमुख पुजारी हुआ करते थे, उन्ही के घर में शास्त्रों के विषय में चर्चा तथा भजन होते थे। ये सभी भक्तजन, दिनरात अपना कामकाज छोड़कर एकत्रित होकर, उत्सवकाल में अत्यंत कठिन होने वाली सेवा, बहुत आदर पूर्वक करते थे। फिलहाल ब्रह्मैक्य हुए शिवय्या, संगप्पा, गोरखनाथ, सिद्धय्या, गंगप्पा, गणप्पा ये सतगुरुजी के निकट शिष्य तन्मयता से उनकी सेवा करते थे। विरुपाक्षप्पा कातरकि नाम के एक श्रेष्ठ भक्त ने सोमवार की पूजा आरंभ की, अनेक भक्तगणों को अपने साथ लाकर वह प्रतिदिन प्रात:काल सेवा करता था। सतगुरुजी का महान भक्त, निरुपादप्पा दोडवाड, अपना घर तथा कामकाज छोड़कर मठ के काम करवाता था। उसी प्रकार अनेक सेवकगण हमेशा मठ में रहकर सेवा करते थे, जिनमें रामानंद मंगेश गोविंद के नाम का विशेष रूप से

उल्लेख करना होगा। अपना घरबार छोड़कर श्रेष्ठ सतगुरु भक्त वीरभद्रप्पा राचप्पा दिनरात रसोईघर की कठिन सेवा करता था। शिवभक्त होने वाले चन्नबसप्पा शेट्रजी ने सतगुरुजी को अपने गाँव, मंटूर ले जाकर बड़े वैभव से उनकी पूजा की थी। उस समय हुबली के तीन भक्त, जो सतगुरुजी का चरणामृत लिए बिना भोजन न करने के कारण तीन दिन भूखे रहे थे, उसके पश्चात सतगुरुजी ने हुबली के भक्तों को पूछे बिना हुबली छोड़कर दूसरे गाँव कभी भी न जाने का नियम बना लिया। वसंतराव दाभोलकर ने "सिद्धारुढ विजय" नाम का सतगुरुजी का जीवन चरित्र छपवाया तथा अनेक छपी जीवनियाँ सतगुरुजी को अर्पण की। उसी प्रकार, परशुराम सबनीस ने महाराजजी का जीवन चरित्र, जो उन्होंने गद्य रूप में लिखा था, उसे भी छपवाकर सतगुरुजी को अर्पण करके निष्काम सेवा में अपना धन खर्च किया। सद्भक्त तथा मेरे बंधु के समान होने वाले दाभोलकरजी ने अपनी निस्सीम भक्ति से सतगुरुजी को आनंदित किया। कोल्हापूर के लक्षणप्पा खमितकर ने अपने पुत्र को विषमज्वर होते ही सतगुरुजी से प्रार्थना की तब सतगुरुजी ने भेजी हुई भभूत रोगी के मुख में डालकर नामस्मरण करते ही वह पूर्ण रूप से तंदुरुस्त हो गया। लक्षणप्पा हर मेले के समय आकर सतगुरुजी से मिलकर अन्नसत्र में दिनरात विशेष सेवा अर्पण करता था। संकप्पा तथा हुच्चप्पा इन सिद्धनाथजी के भक्तों ने सतगुरुजी को गोपनकोप्प नाम के गाँव ले जाकर बड़े वैभव के साथ समारोह मनाया, जिससे सिद्धारूढ़जी संतुष्ट हो गए। परप्पा हुबलीकर ने आजीवन सतगुरुजी की सेवा की तथा सिद्धजी का चिंतन करते करते ही देहत्याग दिया, फिलहाल उनके पोते उन्ही की प्रथा के अनुसार सेवा कर रहे हैं। खंडप्पा तथा दिवटे इन के घर के सिद्धजी के भक्त अनन्य भाव से सतगुरुजी के समारोह में अपना तन-मन-धन अर्पण करते थे। मौनीबुआ नाम के एक भक्त ने मौन का पालन करते करते ही प्रेम पूर्वक सतगुरुजी की सेवा की। एकबार, जब तीन दिन सिद्धारूढ़जी ज्वर से पीड़ित थे, तब मौनीबुआ ने अन्न त्याग करके तीन दिन तप किया था। उन तीन दिनों में मौनीबुआ निद्रा तथा अन्य सारी गतिविधियाँ छोड़कर एक स्थान पर खड़े रह गए थे, सतगुरुजी का ज्वर उतरने के पश्चात ही वे नीचे बैठे तथा उन्होंने अन्न ग्रहण किया। इनके अलावा असंख्य सेवक हैं,

जिन्होंने अत्यंत भक्ति भाव से सतगुरु सेवा की, परंतु ग्रंथ बढ़ता ही जाएगा, इसलिए उनके नाम यहाँ नहीं दिए हैं। ये सभी सतगुरुप्रेम के काबिल हो गए और उनका उद्धार हो गया, सच तो यह है की उनका अनेक जन्मों का तप फलने के कारण उनकी सतगुरुजी से भेंट हुई। सिद्धनाथ सतगुरु यह भक्तों का एक अमूल्य रत्न होकर उनकी कृपा से भक्तों का ताप निवारण होकर वे आनंदित होते हैं। अस्तु। जिसका श्रवण करने से सभी पाप भस्म हो जाते हैं, ऐसे इस श्री सिद्धारूढ़ कथामृत का मधुर सा यह पचपनवाँ अध्याय श्री शिवदास श्री सिद्धारूढ़ स्वामीजी के चरणों में अर्पण करते हैं। सबका कल्याण हो।

॥ श्री गुरुसिद्धारूढ़चरणारविंदार्पणमस्तु ॥